ज्ञानी की पहचान

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

ज्ञानी वह होता है जिसके पास ज्ञान हो। जिसने ज्ञान को अपने जीवन में उतारकर वैसा आचरण किया है वही सच्चा ज्ञानी है। ज्ञान प्राप्त करने के लिए सद्गुरु की आवश्यकता होती है। गुरु शिष्य को ज्ञान प्रदान करता है। बिना गुरु के ज्ञान प्राप्त नहीं होता। इसीलिए गुरुका स्थान ईश्वर से भी ऊँचा है। ज्ञान के द्वारा आत्मा को जाना जाता है। गीता में आत्मा और ज्ञान का विश्लेषण किया गया है। स्वधर्म और स्वकर्म की शिक्षा दी गयी है। ज्ञानयोग, भक्तियोग और कर्मयोग के द्वारा मनुष्य को सही मार्ग पर चलने का प्रयास किया गया है। ज्ञान के द्वारा आत्मनिरीक्षण और आत्मपरीक्षण होता है।

ज्ञानी कौन है? यह जानना आवश्यक है। ज्ञानी अपने शिष्य का ज्ञान नेत्र उद्घाटित कर देता है। स्वामी विवेकानन्द ने अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस की पहचान की और उन्होंने स्वामीजी को आत्मज्ञान देकर ज्ञान नेत्र उद्घाटित किया। ज्ञानी आत्मरमण करता है। वह न किसी से राग करता है न द्वेष करता है। भगवान महावीर ने जीवन में अनेक परिषहों को सहकर केवलज्ञान प्राप्त किया। ज्ञान प्राप्त होने के बाद कषाय समाप्त हो जाते हैं। ज्ञानी सभी जीवों को अपने समान समझता है। ज्ञानी स्थितप्रज्ञ होता है। उसका आभामण्डल पवित्र होता है। ज्ञानी पुरुष जिस स्थान पर विराजते हैं वह स्थान पवित्र और निर्मल हो जाता है।

दादा भगवान पूर्ण ज्ञानी थे। उन्होंने मुक्ति प्राप्त करने के लिए अक्रम विज्ञान का अवदान दिया है। उस मार्ग का अनुकरण करके शीघ्र ही मुक्ति प्राप्त की जा सकती है। क्रम का अर्थ है– क्रमशः धीरे–धीरे आगे बढ़ना। अक्रम का अर्थ है– क्रमशः न चलकर एक छलांग में ऊंची उड़ान भरकर लक्ष्य को प्राप्त कर लेना। क्रम और अक्रम का अपना एक विज्ञान है। इस सिद्धांत को दादा भगवान ने अपने आत्म साधना के उपरान्त समाज को दिया है। आत्मारोहण करते हुए जीव मोक्ष को प्राप्त करता है। इसकी अपनी एक वैज्ञानिक पद्धति है। अक्रम विज्ञान

में जीव डायरेक्ट अंतिम सीढ़ी से उच्च सीढ़ी तक पहुंच जाता है। अक्रम विज्ञान दादा भगवान का दिया गया सिद्धांत है।

आधुनिक काल में अनेक ज्ञानी पुरुष हुए हैं जो इस जगत मीमांसा पर दृष्टि डाले हैं। ऐसे ही मनस्वी पुरुषों में दादा भगवान भी एक प्रमुख चिंतक रहे हैं। दादा भगवान के बचपन का नाम अंबालाल पटेल था। अंबालालजी गुजरात के एक प्रमुख रियलस्टेट के कारोबारी थे। भौतिक सुख संपन्नता की कोई कमी नहीं थी। धीरे–धीरे यह सुख–सम्पन्नता उन्हें मिथ्या प्रतीत होने लगी। उन्होंने इस सब का त्याग कर वास्तविक सुख–सम्पन्नता की ओर मुख मोड़ा। यह वास्तविक सुख–सम्पन्नता आत्म ज्ञान था। 1958 में उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ। इसके पूर्व भी वह सत्संग किया करते थे। 1935 से वो सत्संग किया करते थे। जब उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ तो उन्होंने किसी से बताया नहीं। परन्तु उनमें एक विशेष परिवर्तन उनमें दिखायी देने लगा। दादा भगवान नाम पड़ने का कारण यह है कि बच्चे उन्हें प्रेम से दादा बुलाते थे। वे नहीं चाहते थे कि कोई उन्हें भगवान कहे।

दादा भगवान का मानना था कि भगवान तो हमारे अन्दर विराजते हैं। उन्हीं को जानना, समझना और उन्हीं पर विश्वास करना सच्चा ज्ञान है। आत्मा की शक्ति ही प्रत्यक्ष भक्ति है। धीरे–धीरे उन्हें भेद विज्ञान का ज्ञान हुआ। भेद–विज्ञान का ज्ञान होने पर उन्होंने अपने प्रवचन के माध्यम से लोगों को इससे परिचित कराया। उनके अनुसार पांच आज्ञाएं हैं। पहली आज्ञा है कि निश्चय दृष्टि से मैं शुद्ध आत्मा हूं। शुद्ध आत्मा से तात्पर्य ऐसी आत्मा से है जहां शरीर और आत्मा का पार्थक्य रहता है। आत्मा शुद्ध, बुद्ध और मुक्त है। दूसरी दृष्टि व्यवहार दृष्टि है। व्यवहार दृष्टि से आत्मा शरीर युक्त है। जैसे मैं सोहनराज तातेड़ हूं। व्यवहारिक दृष्टि से आत्मा शरीरबद्ध है और प्रति शरीर नियत है। नाम से ही व्यक्ति की पहचान होती है, किन्तु निश्चय दृष्टि से आत्मा एक है।

तीसरी आज्ञा है जगत को चलाने वाला व्यवस्थित चेतन शक्ति है। यह चेतन शक्ति ही जगत का संचालन कर रही है। कोई ईश्वर या बाह्य शक्ति नहीं है। मैं केवल निमित्त हूं। चौथी आज्ञा समभाव पूर्वक निपटारा करना। एक आदमी के परिवार में अनेक लोग होते हैं। परिवार मिलकर समाज बनता है। समाज से राज्य और राष्ट्र का निर्माण होता है। सबका

अपना–अपना हिस्सा है। जिसके हिस्से में जो है वह उसको मिलना चाहिए। हिस्सेदारी सबकी बराबर है। इस देश में जितने भी लोग है सब राष्ट्र निर्माण में लगे। राष्ट्र निर्माण में उनकी भी उन्नति है।

पांचवी आज्ञा शुद्ध आत्मा का ज्ञान होना। शुद्ध आत्मा शुद्ध, बुद्ध, मुक्त है। क्रम और अक्रम विज्ञान का संबंध आत्मा से है। क्रम विज्ञान का संबंध सीढ़ी के माध्यम से ऊपर चढ़ना है। यह सिद्धांत आत्मारोहण का क्रमिक विकास है। अक्रम विज्ञान का संबंध लिफ्ट के माध्यम से ऊपर चढ़ना है। इसमें आत्मा एक ही बार में मोक्ष में पहुंच जाता है। आत्मा में अनन्त शक्ति है। इस अनन्त शक्ति को जाग्रत करना है। शक्ति के जागरण से सुख दुःख की अनुभूति नहीं होती। इस प्रकार ज्ञानी पुरुष स्वयं संसार सागर को पार करता है और दूसरों को भी भवसागर से पार कर देता है।